"अन्य हितधारकों के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों की आजीविका के मुद्दों को संबोधित करने में वानिकी" में प्रशिक्षण

आयोजन का नाम	"अन्य हितधारकों के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों की आजीविका के मुद्दों को संबोधित करने में वानिकी" में प्रशिक्षण
तिथि	23/07/2025 से 25/07/2025
अवधि	3 दिन
कार्यक्रम का स्थान	वीवीके हॉल, भा. वा. अ. शि. प.-बीआरसी, बेथलहम वेंगथलांग, आइजोल, मिजोरम
उद्देश्य/एजेंडा	अन्य हितधारकों के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों की आजीविका के मुद्दों को संबोधित करने में वानिकी में प्रशिक्षण |
प्रतिभागियों की संख्या	40
भाग लेने वाली संस्था	कॉलेज के छात्र, स्कूल के शिक्षक, स्थानीय परिषद के सदस्य, गैर सरकारी संगठन के सदस्य ।
आयोजन करने वाली संस्था	भा. वा. अ. शि. प. - वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, और भा. वा. अ. शि. प.- बांस एवं रतन केंद्र, आइजोल |
अनुदान देने वाली संस्था	पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC)

प्रशिक्षण का विवरण:

भा. वा. अ. शि. प. -वर्षा वन अनुसंधान संस्थान (आरएफआरआई), जोरहाट, असम ने अपने केंद्र, भा. वा. अ. शि. प. -बांस और रतन केंद्र (बीआरसी), बेथलहम वेंगथलांग, आइजोल, मिजोरम के सहयोग से 23/07/2025 से 25/07/2025 तक भा. वा. अ. शि. प. -बीआरसी के वीवीके हॉल में "आजीविका को संबोधित करने में वानिकी, अन्य हितधारकों के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों के मुद्दों" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

यह प्रशिक्षण पर्यावरण, **वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार** द्वारा प्रायोजित किया गया था।

दिन 1:

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मिजोरम सरकार के खाद्य, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामलों के माननीय मंत्री **श्री बी. लालछंजोवा** ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। इस कार्यक्रम की शुरुआत भा. वा. अ. शि. प. -आरएफआरआई, जोरहाट, असम के निदेशक **डॉ. नितिन कुलकर्णी** के स्वागत भाषण के साथ हुई। इसके बाद भा. वा. अ. शि. प. -बीआरसी के प्रमुख **श्री संदीप यादव** ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। अपने संबोधन में, मुख्य अतिथि ने इस बात पर प्रकाश डाला कि प्रशिक्षण के दौरान हासिल किए

गए कौशल रोजगार सृजन में सहायक होंगे। उन्होंने लोगों के कल्याण के लिए अपने ज्ञान का प्रसार करने वाले वैज्ञानिकों के महत्व पर भी जोर दिया और ऐसी प्रशिक्षण पहलों में महिलाओं की अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया। श्री आर.के. कलिता, वैज्ञानिक-'एफ' भा. वा. अ. शि. प. -आरएफआरआई, जोरहाट ने अपने धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र का समापन किया।

दोपहर के तकनीकी सत्रों ने वानिकी और आजीविका के विभिन्न पहलुओं पर गहन दृष्टि डाली। **डॉ. नितिन कुलकर्णी** ने "पूर्वोत्तर भारत में आजीविका के मुद्दों के समाधान में वानिकी की भूमिका पर अवलोकन" विषय पर एक व्यापक प्रस्तुति दी। इसके बाद, **श्री मालसावमा**, मास्टर ट्रेनर, आईटीआई ने "मिजोरम में आजीविका के लिए मधुमक्खी पालन" पर एक सत्र का नेतृत्व किया। दिन का सत्र **डॉ. अल्बाना एल. चावंगथु**, संकाय पीयूसी के साथ समाप्त हुआ, जिसमें "खाद्य मशरूम और उनके औषधीय लाभ" प्रस्तुत किए गए।

दिन 2:

दूसरे दिन, प्रशिक्षु प्रतिभागियों ने आइजोल से लगभग 70 किमी दूर सैतुल जिले में स्थित इंटरप्रिटेशन सेंटर और हर्बेरियम सहित तामडिल वेटलैंड इकोटूरिज्म साइट का दौरा किया, जहां उन्होंने क्षेत्र के मूल वनस्पतियों और जीवों के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त किया।

दिन 3:

अंतिम दिन में सतत आजीविका सृजन और संसाधन प्रबंधन पर केंद्रित अंतर्दृष्टि प्रस्तुतियों की एक श्रृंखला शामिल थी। दिन की शुरुआत मुख्य तकनीकी अधिकारी (सेवानिवृत्त) **डॉ. आरडी बोरठाकुर** , भा. वा. अ. शि. प. -आरएफआरआई, जोरहाट द्वारा "बांस चारकोल और आजीविका सृजन के लिए ब्रिकेटिंग" पर एक विस्तृत प्रस्तुति के साथ हुई। इसके बाद मिजोरम विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार परिषद (मिस्टिक) के वैज्ञानिक अधिकारी **डॉ. लालचंदामी तोछावंग** ने मिजोरम में ग्रामीण "आजीविका के समर्थन में मिस्टिक" प्रस्तुत किया। चर्चा को और समृद्ध करते हुए, मिजोरम राज्य औषधीय पादप बोर्ड (एसएमपीबी) के **डॉ. लालछनहिमी** ने "मिजोरम के स्थानीय रूप से उपलब्ध और व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले औषधीय पौधों की खेती और व्यापार के माध्यम से आजीविका विकल्प" पर एक प्रस्तुति दी।

दोपहर के सत्रों में कई ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियाँ दी गईं। कृषि विज्ञान केंद्र, आइज़ोल के कृषि प्रबंधक**, श्री लालवेनसांगा पचुआउ** ने "आजीविका सृजन के लिए कम लागत वाले वर्मीकंपोस्टिंग मॉडल" पर विस्तृत जानकारी के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके बाद, **श्री अरुण सुकुमारन**, वैज्ञानिक-बी, भा. वा. अ. शि. प.-बीआरसी ने "वन आनुवंशिक संसाधन और वृक्ष वर्चस्व" पर प्रस्तुति दी, जिसमें सतत वन प्रबंधन पर

बहुमूल्य दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए। **श्री सुभप्रदा बेहरा**, वैज्ञानिक-बी, भा. वा. अ. शि. प.-बीआरसी ने "पूर्वोत्तर भारत में कृषि वानिकी के दायरे और महत्व" पर चर्चा की, और इस क्षेत्र में इसकी संभावनाओं पर प्रकाश डाला। तकनीकी प्रस्तुतियों का समापन **श्री संदीप यादव**, वैज्ञानिक-डी, भा. वा. अ. शि. प.-बीआरसी द्वारा "बाँस और रतन से जैव अर्थव्यवस्था" पर गहन चर्चा के साथ हुआ, जिसमें इन प्रचुर संसाधनों के उपयोग के अभिनव तरीके प्रदर्शित किए गए।

कार्यक्रम का समापन प्रतिभागियों के बहुमूल्य फीडबैक सत्र के साथ हुआ, जिसके बाद सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

Training on "Forestry in Addressing Livelihood Issues of People of North Eastern States for Other Stakeholders"

Name of Event	Training on "Forestry in Addressing Livelihood Issues of People of North Eastern States for Other Stakeholders"
Date(s)	23/07/2025 to 25/07/2025
Duration	3 days
Venue	VVK Hall, ICFRE-BRC, Bethlehem Vengthlang, Aizawl, Mizoram
Purpose/Agenda	Training on Forestry in Addressing Livelihood Issues of People of North Eastern States for Other Stakeholders.
No. of Participants	40
Participating Agency(s)	College Students, School teachers, Members of the Local Council, NGOs.
Organizing Agency(s)	ICFRE-RFRI, Jorhat and ICFRE-BRC, Aizawl
Funding Agency(s)	Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEF&CC).

Concise Details of the Event:

ICFRE-Rain Forest Research Institute (RFRI), Jorhat, Assam in collaboration with its centre, ICFRE- Bamboo and Rattan Centre (BRC), Bethlehem Vengthlang, Aizawl, Mizoram organized a three days training programme on **"Forestry in addressing livelihood, issues of people of north eastern states for other stakeholders"** in the VVK Hall of ICFRE-BRC from 23/07/2025 to 25/07/2025.

The training was sponsored by the **Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India**.

Day 1:

The program's inaugural session was graced by **Pu B. Lalchhanzova, Hon'ble Minister for Food, Civil Supplies and Consumer Affairs, Government of Mizoram**, who attended as the Chief Guest. The event began with a welcome address by **Dr. Nitin Kulkarni**, Director, ICFRE-RFRI, Jorhat, Assam. Following this, **Shri Sandeep Yadav**, Head, ICFRE- BRC, provided a concise briefing about the training program. In his address, the Chief Guest highlighted that the skills acquired during the training would be instrumental in employment generation. He also stressed the importance of scientists disseminating their knowledge for the welfare of the people and encouraged greater participation of women in such training initiatives. **Shri R.K. Kalita**, Scientist-'F' ICFRE-RFRI, Jorhat concluded the inaugural session with his vote of thanks.

The afternoon technical sessions provided an in-depth look at various aspects of forestry and livelihoods. **Dr. Nitin Kulkarni** delivered a comprehensive presentation on "Overview on role of forestry in addressing livelihood issues in North Eastern India." Following this, **Pu Malsawma**, Master Trainer, ITI, led a session on "Apiculture for Livelihood in Mizoram." The day's sessions concluded with **Dr. Albana L. Chawngthu**, faculty PUC, presenting on "Edible Mushroom and their Medicinal Benefits."

Day 2:

On the second day, the trainee participants visited Tamdil Wetland Ecotourism Site including the Interpretation Centre and Herbarium, located in Saitual district, around 70 km from Aizawl where they acquired more knowledge about the native flora and fauna of the region.

Day 3:

The final day featured a series of insightful presentations focused on sustainable livelihood generation and resource management. The day commenced with an elaborate presentation on "Bamboo Charcoal and Briquetting for Livelihood Generation" by **Dr. R. D. Borthakur**, Chief Technical Officer (Retd.), ICFRE-RFRI, Jorhat. This was followed by **Dr. Lalchhandami Tochhawng**, Scientific Officer, Mizoram Science, Technology & Innovation Council (MISTIC), who presented on "MISTIC in Support of Rural Livelihood in Mizoram." Further enriching the discussions**, Dr. Lalchhanhimi** from the State Medicinal Plants Board (SMPB), Mizoram, delivered a presentation on "Livelihood Options through Cultivation and Trade of Locally Available and Widely Utilized Medicinal Plants of Mizoram."

The afternoon sessions offered a range of insightful presentations. **Pu Lalvensanga Pachuau**, Farm Manager, KVK, Aizawl, kicked things off with a detailed look at "Low Cost Vermicomposting Models for Livelihood Generation." Following this, **Sh. Arun Sukumaran**, Scientist – B, ICFRE-BRC, presented on "Forest Genetic Resources and Tree Domestication," offering valuable perspectives on sustainable forest management. **Sh. Subhaprada Behera**, Scientist – B, ICFRE-BRC, then discussed the "Scope and Importance of Agroforestry in NE India," highlighting its potential for the region.The technical presentations wrapped up with **Sh. Sandeep Yadav**, Scientist – D, ICFRE-BRC, who delved into the "Bioeconomy from Bamboo & Rattan," showcasing innovative ways to utilize these abundant resources.

The program concluded with a valuable feedback session from the participants, followed by the

distribution of certificates to all trainees.

DAY 1

d

Figure 1: A-H: Glimpses of the Inagural session

Figure 1: A-H: Glimpses of the Technical session

DAY 2

d

Figure 1: A-F: Visit to Tamdil Wetland

DAY 3

Figure 1: A-H: Glimpses of the training

Figure 1: A-H: Feedback session from the participants & Distribution of certificates

COVERAGE IN LOCAL NEWSPAPERS

VIRTHLI 24TH JULY

Ramngaw hausakna atanga eizawngnna kawhhmuhna hun hmang

Ramngaw hausakna atang a eizawnna hrang hrang inkawhhmuh na leh in-zirtirna hun, nithum chhung awh tur chu ICFRE-BRC, Bethlehem Veng

thlangah nimin atang khan tan a ni a. Aizawl East-II bial tu MLA leh Minister ni bawk Pu B. Lalchhanzova khuallian niin, Minister chuan kalkhawm te chu he training atang a thiamna paw chhuak ngei tur leh hun lo kal zel tur atan a eizawnna kawng sial sak tu atan hmang tangkai thei se a duh thu a sawi a. Helam a zir bing mi te leh mithiam zawk te rawn chung a, Science thiamna hmang tangkai thiam zel thei turin kalkhawm te a chah bawk. Minister chuan, ramin hma a sawn zel theihna tur a hmei chhia te pawimawh na sawiin, hmeichhe dinhmun chawikan deuh deuh a pawimawh thu a sawi bawk. He hunah hian Dr. Nitin Kulkarni, Director, ICFRE-RFRI Jorhat, khual zahawm chuan Mizoram in ram ngaw ala neih that thu leh, kan ram ngaw hausakna te humhalh chung a hmang tangkai thiam turin kalkhawm te a chah bawk. He hun ah hian Aizawl khawchhung a College thlan chhuah bik a tangin Zirlai te leh Local Council thlan bik te, YMA branch hrang hrang thlan chhuah bik te leh Bethlehem Vengthlang huam chhung a Zir na in a thawktu te he training ah hian an tel a ni.

THE ZORAM VOICE 24TH JULY

Ramngaw atanga eizawnna hrang hrang inkawhhmuhna hun hmang

Ramngaw hausak -na atang a eizawnna hrang hrang inkawhhmuh -na leh inzirtirna hun, nithum chhung awh tur chu ICFRE-BRC, Bethle -hem Vengthlangah nimin July 23, 2025 atang khan hman tan a ni a. Scientist-D & Head, ICFRE-BRC chuan kaihhruaiin, training buat-saih a nih dan leh a tum tlangpui te a sawi a. He hun hi Aizawl East-II bialtu MLA, Minister ni bawk B. Lalchhanzova chu khual lian niin, he train-ing ni thum chhung awh tur hawnna hi a hmanpui.

Khuallian Minister B Lalchhanzova chuan chuan thusawiin kalkhawm te chu he training atang a thiamna paw chhuak ngei tur leh hun lo kal zel tur atan a eizawnna kawng sial saktu atan hmang tang kai thei se a duh thu a sawi a. Helam a zir bing mite leh mithiam zawk te rawn chunga, Science thiamna hmang tangkai thiam zel thei turin kalkhawm te a chah bawk.

Minister chuan, ramin hma a sawn zel theih -na tura hmeichhia te pawi-mawh na sawiin, hmeichhe dinhmun chawikan deuh deuh a pawimawh thu a sawi bawk.

He hunah hian Dr. Nitin Kulkarni, Director, ICFRE-RFRI Jorhat, khual zahawm pawhin thusawiin, Mizoram in ramngaw ala neih that thu leh, kan ram ngaw hausakna te humhalh chunga hmang tangkai thiam turin kalkhawm te a chah bawk. He hun ah hian

(Col. leh lamah zawmna)

NEWSLINK 25TH JULY

Training for Other Stakeholders on Forestry in Addressing Livelihood Issues of People of North Eastern States

Aizawl, July 23: ICFRE-Bamboo and Rattan Centre (ICFRE-BRC), Aizawl organized three days "Training for Other Stakeholders on Forestry in Addressing Livelihood Issues of People of North Eastern States" during 23rd to 25th July, 2025 at VVK Hall ICFRE-BRC Bethlehem Vengthlang for 30 persons including Students, Teachers, Local Council Members and Branch YMA Members.

SandeepYadav, Scientist-D & Head ICFRE-BRC delivered the welcome address and gave a brief presentation on the course of the training programme for the participants.Pu B. Lalchhanzova, Hon'ble Minister Department of Food, Civil Supply and Consumer Affairs Govt. of Mizoram was the Chief Guest and inaugurated the training programme.

He emphasised in his speech that the experience gained by the participants in the training will help in employment generation and stressed for the dissemination of knowledge by the Scientists for the welfare of the people.

The Hon'ble Minister also emphasised for the greater participation of women in such trainings. The participants will be trained on topics such as forestry in addressing livelihood, apiculture, mushroom cultivation, low cost vermicomposting, bamboo charcoal making, and importance of medicinal plants, forest genetic resources, tree domestication and agro forestry in Mizoram.

The Guest of Honour Dr. Nitin Kulkarni, ICFRE-Rain Forest Research Institute, Jorhat (Assam) stressed in his speech on the importance of forests as natural reservoir of resources and since Mizoram has around 87% of forests land the training is well aligned to the sustainable development and generation of livelihoods for the people of Mizoram. Pu R.K. Kalita, Scientist-'F' ICFRE-RFRI, Jorhat concluded the inaugural session with his vote of thanks.

COVERAGE IN LOCAL NEWS CHANNELS

LPS NEWS 23RD JULY

ZONET NEWS 23rd JULY

DD NEWS MIZORAM 23RD JULY